श्रुम विभाग

दिनांक 19 फरवरी, 1987

सं श्रो वि । (फरीदाबाद | 234-86 | 7359 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं वि लखानी इण्डस्ट्रीज, 17/3, मशुरा रोड़, फरीदाबाद, के श्रमिक महासचिव, हिन्द मजदूर समा, 21 शहीद चौक, फरीदाबाद, तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलें के सम्बन्ध में कोई श्रोदोगिक विवाद है;

भीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं:

इसलिए, अब, भीदोगिक विवाद, अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपसारा (1) के सुख् (म्र) द्वारा प्रदान की गई किताओं का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7-क के अधीन गठित अधिविषक अधिकरण, हरियाणा, करीदावाद, को नीचे विनिर्दिष्ट पामला जो कि उक्त प्रदन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादगुस्त मामला है. अथवा विवाद से ससंगत या संबंधित मामला है त्यापनि गैंग एवं पंचाट छ: मास में देने हेत निर्दिष्ट करने हैं:---

क्या संस्था में तालाबन्दी/कलौजर खुलवाने की मांग न्यायोचित तथा ठींक है ? यदि नहीं, तो श्रमिक किस राहत के हकटार है ?

> कुलवन्त सिंह, विस्तायुवत एवं सिद्धव, हरियाणा सरकार, श्रम तथा रोजगार विभाग ।

दिनांक 17 फरवरी, 1987

सं.म्रो. वि. एफडी/29-87/6723.--चूंकि.हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० परफैक्ट फास्टनरज प्रा० लि०, 1/43, डी. एल. एफ. इण्डस्ट्रीयल इस्टेंट, फरीदावाद, के श्रीमक श्री प्रेम सिंह, मार्फत श्री ग्रमर सिंह शर्मा, लेकर यूनियन ग्राफिस, 1कै/14, एन. ग्राई.टी. फरीदावाद, तथा उसके प्रयम्थकों के मध्य इस में इस के बाद लिखित मामलें में कोई ग्रीधोणिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा, के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं ;

इसलिए, यब, श्रौद्योगिक विवाद श्रीधिनियम, 1947, की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 5415-3-श्रम-68/15254, विनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं 11495-जी-श्रम-57/11245, विनांक 7 फरवरी 1958, द्वारा उवल श्रिधनियम की धारा 7 के श्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को खुबादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनण्य एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रिक के बिच या तो विवाद से स्वाद से स्संगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है:--

क्या श्री प्रेम सिंह की सेवाश्चों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं श्रो वि एपडी 45-87/6730 -- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० सिराकों प्रेसिंग्ज शा० लि०, 15/7, मथुरा रोड़, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री नागेन्द्र कुमार, मार्फत सीटू, 2/7, गोपी कालोनी, श्रोल्ड फरीदाबाद, तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इस में इस के बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रीधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (म) हारा प्रवान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के हारा सरकारी ग्रीधसूचना सं. 5 415-3-श्र 68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए ग्रीधसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी 1958, हारा उक्त ग्रीधिनयम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबांद, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निद्धिट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीसक के बीच या तो विज्ञादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री नागेन्द्र कुमार की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि महीं, सोश्वह किस राहत का हकदार है ?